



أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि रज़वी **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ**

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ यह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तर्जमा : ऐ **ABWAH** ! **عَزَّوَجَلَّ** हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अज़मत और बुजुर्गी वाले ।

(المُسْتَطَرَف ج ١ ص ٢٠٠ دار الفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

तालिबे ग़मे मदीना

बकीअ

व मग़फ़िरत



13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)

(تاريخ دمشق لابن عساکر، ج ٥١ ص ١٣٨ دار الفكر بيروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में

आगे पीछे हो गए हों तो मक्ताबतुल मदीना से रुजूअ फ़रमाइये ।





तआक़फ़ मजलिसे तराजिम (हिन्दी)

الْحَمْدُ لِلَّهِ الْعَلِيِّ
 दा 'वते इस्लामी की मजलिस "अल मदीनतुल इल्मिय्या" ने येह रिसाला "सदाएँ मदीना" उर्दू ज़बान में पेश किया है और मजलिसे तराजिम ने इस रिसाले का 'हिन्दी' रस्मुल ख़त (लीपियांतर) करने की सआदत हासिल की है [भाषांतर (Translation) नहीं बल्कि सिर्फ़ लीपियांतर (Transliteration) या'नी बोली तो उर्दू ही है जब कि लीपि (लिखाई) हिन्दी की गई है] और मक्तबतुल मदीना से शाएअ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी-बेशी या ग़लती पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअए Sms, E-mail या Whats App ब शुमूल सफ़हा व सतर नम्बर) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

ख़ास नोट : इस्लामी बहनों को डायरेक्ट राबिता करने की इजाज़त नहीं है।

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त क्व लीपियांतर ख़ाक़

थ = ث	त = ت	फ = ف	प = پ	भ = ب	ब = ب	अ = ا
छ = چ	च = ج	झ = ز	ज = ج	स = س	ठ = ٹ	ट = ٹ
ज़ = ز	ढ = ڈ	ड = ڈ	ध = د	द = د	ख़ = خ	ह = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ = ڈ	ड़ = ڈ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ = ع	ज़ = ظ	त = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گ	ग = گ	ख = ک	क = ک	क़ = ق
ी = ئ	و = و	आ = آ	य = ی	ह = ه	व = و	न = ن

✍ :- राबिता :- ✍

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, कासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर, नागर वाड़ा मेन रोड,

बरोडा, गुजरात, अल हिन्द, ☎ 09327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net



أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

सदाउ मदीना

(जैली हल्के के 12 मदीनी कामों में से पहला मदीनी काम)

दुरूदे पाक की फज़ीलत

सरकारे मदीना, करारे कल्बो सीना **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने आलीशान है। या'नी क़ियामत के दिन लोगों में सब से ज़ियादा मेरे करीब वोह शख्स होगा, जो सब से ज़ियादा मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ता होगा। ⁽¹⁾ मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़ती अहमद यार ख़ान **رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان** عليه ورحمة الله المنان इस हदीसे पाक के तहत इरशाद फ़रमाते हैं : क़ियामत में सब से आराम में वोह होगा, जो हुज़ूर (**صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**) के साथ रहे और हुज़ूर (**صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ**) की हमराही नसीब होने का ज़रीआ दुरूद शरीफ़ की कसरत है। इस से मा'लूम हुवा कि दुरूद शरीफ़ बेहतरीन नेकी है कि तमाम नेकियों से जन्नत मिलती है और इस से बज़मे जन्नत के दुल्हा **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** (मिलते हैं)। ⁽²⁾

हर्र में क्या क्या मजे वारफ़्तगी के लूं रज़ा लौट जाऊं पा के वोह दामाने आली हाथ में ⁽³⁾

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

[1].....ترمذی، ابواب الوتر، باب ماجاء فی فضل الصلاة... الخ، ص 133، حدیث: 3883

[2].....میر آتول مناجیہ، دुरूد شاریف کا باب، दूसरी फ़स्ल, 2/100

[3].....हदाइके बख़्शाश, स. 104

शे'र की वज़ाहत

इस शे'र में आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए रिसालत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن अपने आप को मुख़ातब कर के इरशाद फ़रमा रहे हैं : ऐ रज़ा ! मैदाने ह़शर में **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जब अपने उशशाक़ और दीवानों पर फ़ज़लो करम फ़रमा रहे होंगे तो उस अ़लम में मेरी बेखुदी का अ़लम कैसा होगा ? बस मैं तो सरकारे वाला तबार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का दामन थाम लूंगा ।

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

सदाएँ मदीना क्या है ?

तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की अ़लमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माहोल में नमाजे फ़ज़्र के लिये मुसलमानों को जगाना **सदाएँ मदीना** कहलाता है । **सदाएँ मदीना** दा'वते इस्लामी के बारह (12) मदनी कामों में से एक इन्तिहाई अहम मदनी काम है जो कि शरअन मूजिबे सवाब है । जैसा कि फ़तावा रज़विख्या शरीफ़ जिल्द 5, सफ़्हा 378 पर है कि आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए रिसालत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن से नमाजे फ़ज़्र के लिये लोगों को उठाने के मुतअल्लिक़ पूछा गया कि अगर नमाज़ियों को नमाज़ के वक़्त से घन्टा आध घन्टा पहले उन की इजाज़त से या बिग़ैर इजाज़त उन के मक़ानों पर जा कर फ़ज़्र की नमाज़ के वासिते ब ताकीद जगा दिया जाए तो जाइज़ है या नहीं ? तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने उस का जवाब येह

अता फ़रमाया कि नमाज़ के लिये जगाना मूजिबे सवाब है, मगर वक़्त से इतना पहले जगाने की क्या हाज़त है? अलबत्ता! ऐसे वक़्त जगाए कि इस्तिन्जा व वुजू वगैरा से फ़ारिग़ हो कर सुन्नतें पढ़े और तकबीरे ऊला में शामिल हो जाए।⁽¹⁾

सदाएँ मदीना लगाना सुन्नत है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! सदाएँ मदीना लगाना **أَبْوَابُ** के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की बड़ी ही प्यारी सुन्नत भी है। जैसा कि हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन तिख़फ़ा **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** से मरवी है कि एक बार उन्हें चन्द सहाबाए किराम **عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان** के हमराह महबूबे खुदा, सय्यिदुल अम्बिया **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का मेहमान (Guest) बनने का शरफ़ हासिल हुवा तो खाने वगैरा से फ़ारिग़ हो कर वोह सब मस्जिद शरीफ़ में आ कर आराम करने लगे, फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर, सरापा नूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** मस्जिद में तशरीफ़ लाए तो आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** ने सोए हुवे लोगों को बुलन्द आवाज़ से नमाज़ पढ़ने के लिये जगाया।⁽²⁾ इसी तरह एक रिवायत में हज़रते सय्यिदुना अबू बकरह (या'नी हज़रते सय्यिदुना नकीअ बिन हरिस सक़फ़ी) **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** फ़रमाते हैं कि मैं सरकारे मदीना, करारे क़ल्बो सीना **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के साथ नमाज़े फ़ज़्र के लिये निकला तो आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** सोए हुवे जिस शख़्स पर भी गुज़रते, उसे नमाज़ के लिये आवाज़ देते या पाउं मुबारक से हिलाते।⁽³⁾

[1].....फ़तावा रज़विय्या, 5 / 378

[2]..... مُسْتَدْرَأُ أَحْمَد، حَدِيثُ طَبَعْتَةُ الْغَفَارِي، ٥٨٦/٩، حَدِيثُ: ٢٣٢٥٩ مَفْهُومًا

[3]..... ابوداؤد، كتاب الصلاة، باب الاضطجاع بعدها، ص ٢٠٨، حَدِيثُ: ١٢٦٣



मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जो खुश नसीब इस्लामी भाई **सदाएँ मदीना** लगाते हैं, **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَعَلَيْهِمْ وَسَلَّمَ** अदाएँ सुन्नत का सवाब पाते हैं। याद रहे ! पाउं से हिलाने की सब को इजाज़त नहीं। सिर्फ़ वोह बुजुर्ग पाउं से हिला सकते हैं कि जिस से सोने वाले की दिल आज़ारी न होती हो। हां अगर कोई मानेएँ शरई न हो तो अपने हाथों से पाउं दबा कर जगाने में हरज नहीं। यकीनन हमारे मीठे मीठे आका, मदीने वाले मुस्तफ़ा **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَعَلَيْهِمْ وَسَلَّمَ** अगर अपने किसी गुलाम को मुबारक पाउं से हिला दें तो उस के सोएँ हुवे नसीब जगा दें और किसी खुश बख़्त के सर, आंखों या सीने पर अपना मुबारक क़दम रख दें तो खुदा **عَزَّوَجَلَّ** की क़सम ! कौनैन का चैन बख़्शा दें।

एक ठोकर में ज़हुद का ज़लज़ला जाता रहा रखती हैं कितना वक़ार **اللَّهُ أَكْبَرُ** एड़ियां⁽¹⁾

येह दिल येह जिगर है येह आंखें येह सर है जिधर चाहो रखो क़दम जाने आ़लम⁽²⁾

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

सुन्नते दावूदी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुब्ह के वक़्त बारगाहे खुदावन्दी में हाज़िरी (या'नी नमाज़े फ़ज़्र) के लिये सोएँ हुवे लोगों को जगाना सिर्फ़ हमारे आका, दो आ़लम के दाता **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَعَلَيْهِمْ وَسَلَّمَ** की ही सुन्नत नहीं बल्कि एक रिवायत

[1]....हदाइके बख़्शाश, स. 87

[2]....फ़ैज़ाने सुन्नत, फ़ैज़ाने **بِسْمِ اللَّهِ**, 1/37





में आता है कि **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** के नबी हज़रते सय्यिदुना दावूद **عَلَيْهِ السَّلَام** भी रात को एक मख़सूस वक़्त पर अपने बीवी बच्चों को जगाते और फ़रमाते : ऐ आले दावूद ! उठो और नमाज़ पढ़ो ! क्यूंकि येह ऐसी घड़ी है जिस में **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** सिवाए जादूगर और टेक्स वुसूल करने वालों के सब की दुआ क़बूल फ़रमाता है ।⁽¹⁾

सहाबए किराम का अम्बियाए किराम की सुन्नत पर अमल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शदाए मदीना लगाना अम्बियाए किराम **عَلَيْهِمُ السَّلَام** की इस क़दर प्यारी सुन्नत है कि सहाबए किराम **عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان** ने भी इसे ख़ूब अपनाया और वोह भी हज़रते सय्यिदुना दावूद **عَلَيْهِ السَّلَام** की तरह अपने घरवालों को जगाया करते जैसा कि हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** फ़रमाते हैं कि मेरे वालिदे मोहतरम अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** रात में जिस क़दर रब तआला चाहता, नमाज़ पढ़ते रहते, यहां तक कि जब रात का आख़िरी वक़्त होता तो अपने घरवालों को भी नमाज़ के लिये जगा देते और उन से फ़रमाते : **الصَّلَاةُ** या'नी नमाज़ । फिर येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाते :

وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِالصَّلَاةِ وَاصْطَبِرْ

عَلَيْهَا لَا تَسْأَلْ رِزْقًا نَحْنُ

نَرْزُقُكَ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوَى ①

(प: १६, १३२: १३२)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अपने घरवालों को नमाज़ का हुक्म दे और खुद इस पर साबित रह कुछ हम तुझे से रोज़ी नहीं मांगते हम तुझे रोज़ी देंगे और अन्जाम का भला परहेज़गारी के लिये ।⁽²⁾



①.....مُسْتَدْرَأُ أَحْمَد، مسند المدینین، حدیث عثمان بن ابی... الخ، ۶/۶۰۸، حدیث: ۱۶۷۱۷

②.....مشكاة المصابيح، كتاب الصلاة، باب التحريض... الخ، الفصل الثالث، ۱/۲۳۳، حدیث: ۱۲۳۰





मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येही नहीं बल्कि खुलफ़ाए राशिदीन में से हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ और हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** ने तो अपने आका, दो अ़ालम के दाता **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की येह सुन्नत अदा करते हुवे जामे शहादत नोश फ़रमाया । चुनान्वे,

अदाएँ सुन्नत पब मौत



दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूअ 864 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब फ़ैज़ाने फ़ारूके आ'ज़म (जिल्द अब्वल) सफ़हा 757 पर है । बा'ज़ रिवायात में है कि (अमीरुल मोमिनीन हज़रते) सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** अपने घर से जब (भी) नमाज़े फ़ज़्र के लिये निकलते तो **सदाएँ मदीना** लगाते हुवे निकलते या'नी रास्ते में लोगों को नमाज़ के लिये जगाते हुवे आते, अबू लुअलुअ रास्ते में ही छुपा हुवा था और उस ने मौक़अ देख कर आप पर खन्जर के तीन कातिलाना वार कर दिये जो मोहलिक साबित हुवे ।⁽¹⁾

सदाएँ मदीना दूँ रोज़ाना सदका

अबू बक्रो फ़ारूक़ का या इलाही⁽²⁾

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدًا



[1] طبقات كبرى لابن سعد، ٥٦- عمر بن الخطاب، ذكر استخلاف عمر، ٣/٢٦٣ مفهوماً

[2] वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 103





इसी तरह अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा **كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ** की शहादत का वाक़िआ बयान करते हुवे इमाम जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي** फ़रमाते हैं कि जब मुअज़्ज़िन ने आ कर अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा **كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ** को वक्ते नमाज़ की इत्तिलाअ दी तो आप **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** नमाज़ पढ़ाने के लिये घर से चले और रास्ते भर लोगों को नमाज़ के लिये आवाज़ लगा कर जगाते जा रहे थे कि इब्ने मुल्जम ख़बीस ने आप **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** पर अचानक तलवार का भरपूर वार किया, जिस से आप **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** शदीद ज़ख़मी हो गए और बा'द में ज़ख़्मों की ताब न लाते हुवे जामे शहादत नोश फ़रमा गए।⁽¹⁾

أَبُو بَكْرٍ की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो। **آمِينَ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ الْأَمِينُ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**

सब को नमाज़ों के लिये बेदार मैं करूं

मौला अली का वासिता या रब्बे मुस्तफ़ा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **أَبُو بَكْرٍ** ने हमें अपनी इबादत के लिये पैदा फ़रमाया है, जैसा कि पारह 27 सूरतुज्ज़ारियात की आयत नम्बर 56 में इरशाद होता है : **(ب) (٢٧، ٥٦) : وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ** (अल-अन्बिया: 56) और मैं ने जिन्न और आदमी इतने ही (इसी लिये) बनाए कि मेरी बन्दगी करें।



[1] تاريخ الخلفاء، علي بن ابي طالب، فصل في مبايعة علي بالخلافة... الخ، ص 112 ماخوذاً





अफ़सोस ! सद अफ़सोस ! हम तो अपने रब **عَزَّوَجَلَّ** की याद से गाफ़िल हो कर महज़ दुनियावी लज़्ज़तों और नफ़्सानी ख़्वाहिशों के हुसूल में मग्न हैं, मगर हमारे रब **عَزَّوَجَلَّ** की रहमत है कि हमारी बख़्शिश के बहाने ढूँडती है। जैसा कि किसी ने क्या ख़ूब फ़रमाया है :

رَحْمَتِ حَقِّ "بِهَاءِ" عَمَّ جَوَيْدِ رَحْمَتِ حَقِّ "بِهَاءِ" عَمَّ جَوَيْدِ

या'नी **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** की रहमत कीमत तलब नहीं करती बल्कि **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** की रहमत तो बहाना ढूँडती है।

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** से मरवी है कि **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** के प्यारे हबीब, कुल उम्मत के तबीब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने मग़फ़िरत निशान है : जब रात का एक तिहाई हिस्सा बाकी रह जाता है तो **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** आस्माने दुनिया पर (अपनी शान के मुताबिक़) नुज़ूल फ़रमाता है और वोह इरशाद फ़रमाता है : है कोई हाज़त मन्द कि मैं उसे अता करूं ? है कोई दुआ करने वाला कि मैं उस की दुआ क़बूल करूं ? है कोई तौबा करने वाला कि मैं उस की तौबा क़बूल करूं ? है कोई बख़्शिश चाहने वाला कि मैं उसे मुआफ़ करूं ? यहां तक कि फ़त्र का वक़्त हो जाता है।⁽¹⁾ मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْعَالَمِينَ** मिरआतुल मनाजीह में एक मक़ाम पर फ़रमाते हैं : आख़िरी तिहाई रात के तीन हिस्से करो, इस के दरमियानी हिस्से में तहज्जुद पढ़ो गोया रात के छठे हिस्से में उसी वक़्त सहरी खाना, दुआएं मांगना बल्कि इस्तिग़फ़ार करना अफ़ज़ल है, क्यूंकि इस वक़्त रहमते इलाही दुनिया की तरफ़ ज़ियादा मुतवज्जेह होती है और इस वक़्त जागना नफ़्स पर शाक़ है।



[1] الشّنة لابن ابي عاصم، باب ذكر نزول ربنا... الخ، ص ۳۲۹، حدیث: ۵۱۰





कर मग़फ़िरत मेरी, तेरी रहमत के सामने

मेरे गुनाह या ख़ुदा हैं किस शुमार में? ⁽¹⁾

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मुर्ग़ की ड्यूटी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह हमारी किस क़दर बद किस्मती (Bad Luck) है कि हम इस बा बरकत वक़्त की सआदतों से महरूम और ख़्वाबे ग़फ़लत के मज़ों में गुम हो जाते हैं, हालांकि इस वक़्त **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** की एक मख़्लूक भी हमें पुकार पुकार कर रब **عَزَّوَجَلَّ** की रहमत की तरफ़ मुतवज्जेह कर रही होती है, जैसा कि हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ख़ालिद **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** से मरवी है कि सरवरे काइनात, फ़ख़्रे मौजूदात **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : **मुर्ग़ को बुरा न कहो, बेशक येह नमाज़ के लिये बेदार करता है !!!** ⁽²⁾ लिहाज़ा हमें चाहिये कि अपनी आंखों से ग़फ़लत का पर्दा उतारें खुद भी इबादते इलाही में मसरूफ़ हों और दूसरों को भी इस की तरगीब दिलाएं, इस के लिये तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी का प्यारा प्यारा मदनी माहोल नेकियों का ज़ख़ीरा करने का एक बहुत ही आसान ज़रीआ है, चूँकि अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** ने हमें जो अज़ीम मदनी मक्सद



[1]....वसाइले बख़िश (मुम्मम), स. 275

[2].....ابوداؤد، كتاب الادب، باب ماجاء في الديك والبهايم، ص 494، حديث: 5101



अता फ़रमाया है वोह येह है कि “मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है” **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** । लिहाजा सहरि के वक़्त रब **عَزَّوَجَلَّ** की रहमत का हक़दार बनने की एक आसान सूरत येह है कि जैली हल्के के 12 मदनी कामों में से रोज़ाना के एक मदनी काम या'नी **सदाएँ मदीना** को अपनी ज़िन्दगी का मा'मूल बना लीजिये, कि इस की बरकत से तहज्जुद के इलावा बा जमाअत फ़ज़्र की नमाज़ पढ़ने की भी सआदत मिलेगी । मदनी इन्आम पर अमल होगा, येही नहीं बल्कि दर्जे जैल फ़वाइद भी हासिल होंगे । **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** ।

सदाएँ मदीना के फ़वाइद

(1) नमाज़ की हिफ़ाज़त

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **सदाएँ मदीना** नमाजे फ़ज़्र की हिफ़ाज़त का एक बेहतरीन ज़रीआ भी है, इस से जहां **सदाएँ मदीना** लगाने वालों की नमाजे फ़ज़्र की हिफ़ाज़त होती है वहीं **सदाएँ मदीना** सुन कर बेदार होने वाले भी नमाजे फ़ज़्र अदा करने की सआदत हासिल कर लेते हैं ।

हो जाएं मौला मस्जिदें आबाद सब की सब

सब को नमाज़ी दे बना या रब्बे मुस्तफ़ा⁽¹⁾

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

[1]....वसाइले बख़्शिश (मुम्मम), स. 131

(2) रिज़्क में इज़ाफ़ा

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 103 सफ़हात पर मुशतमिल किताब राहे इल्म सफ़हा 91 पर है कि **عَلَى السُّبْحِ** बेदार होना, ने'मतों में इज़ाफ़े का बाइस बनता है, खुसूसन इस से रिज़्क में इज़ाफ़ा होता है। चुनान्चे, रिज़्क में इज़ाफ़ा चाहते हैं तो **सदाउ मदीना** जैसे प्यारे मदनी काम को अपना मा'मूल बना लीजिये, इस से रिज़्क में इज़ाफ़ा ही नहीं होगा बल्कि दोनों जहां की भलाइयां भी नसीब होंगी। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**

(3) एक नमाज़ में कई नमाज़ों का सवाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **सदाउ मदीना** लगाने वालों की भी क्या बात है कि येह खुद एक नमाज़ पढ़ते हैं मगर सवाब कई नमाज़ों का पाते होंगे। वोह इस तरह की येह **सदाउ मदीना** लगाने के बा'द बा जमाअत नमाज़े फ़ज़्र अदा करते हैं मगर इन की **सदाउ मदीना** लगाने की बरकत से जितने इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें नमाज़े फ़ज़्र अदा करने की सआदत हासिल करते होंगे, **عَزَّوَجَلَّ** की रहमत से उम्मीद है, उन की नमाज़ों का सवाब इन्हें (या'नी **सदाउ मदीना** लगाने वालों को) भी मिलता होगा। क्युंकि फ़रमाने मुस्तफ़ा **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** है : **مَنْ دَلَّ عَلَى خَيْرٍ فَلَهُ مِثْلُ أَجْرِ فَاعِلِهِ** : या'नी जो शख्स नेकी का काम करने पर किसी की राहनुमाई करता है उसे भी वोही अज्रो सवाब मिलता है, जो उस नेकी करने वाले को मिलता है।⁽¹⁾

1..... ابو داؤد، كتاب الادب، باب في الدال على الخير كفاعله، ص 801، حديث: 5129



इस तरह फैले नेकी की दा'वत कि नेक हो

हर एक छोटा और बड़ा या रब्बे मुस्तफ़ा⁽¹⁾

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

(4) तहज्जुद की सआदत



सदाएँ मदीना की बरकत से तहज्जुद की पाबन्दी नसीब हो सकती है कि जिस के मुतअल्लिक अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा **كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ** से रिवायत है कि महबूबे रब्बे दावर, शफ़ीए रोज़े महशर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने अलीशान है : जन्नत में ऐसे बालाख़ाने हैं, जिन का बाहर अन्दर से और अन्दर बाहर से देखा जाता है। एक आ'राबी ने उठ कर अर्ज़ की : या रसूलल्लाह **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ! येह किस के लिये हैं ? तो आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : येह उस के लिये हैं जो नर्म गुफ़्तगू करे, खाना खिलाए, मुतवातिर रोज़े रखे और रात को जब लोग सोए हुवे हों तो उठ कर **أَبُوهُ** **عَزَّوَجَلَّ** के लिये नमाज़ पढ़े।⁽²⁾

मैं पढ़ता रहूँ काश ! सारे नवाफ़िल

तहज्जुद हो हर शब अदा या इलाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

[1].....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 131

[2]..... त्रुमज़ी, کتاب صفة الجنة، باب ماجاء فی صفة غرف الجنة، ص 599، حدیث: 2527



(5) पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ नमाज़ की फ़ज़ीलत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सदाएँ मदीना की बरकत से पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअत नमाज़ पढ़ने की सआदत भी मिलती है और पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ नमाज़ पढ़ने वाले मदनी इन्आम पर अमल भी हो जाता है । चुनान्चे, पहली सफ़ में नमाज़े बा जमाअत अदा करने के मुतअल्लिक हज़रते सय्यिदुना बरा बिन अज़िब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते पहली सफ़ पर रहमत भेजते हैं ।⁽¹⁾ और इसी तरह हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : अगर लोग जान लें कि अज़ान और पहली सफ़ में क्या है ? और फिर इन दोनों सआदतों को पाने के लिये अगर उन्हें कुरआ अन्दाज़ी भी करना पड़े तो ज़रूर कर गुज़रें ।⁽²⁾ या'नी लोग जब अज़ान और सफ़े अव्वल के सवाब को जान लेंगे तो हर एक येही चाहेगा कि उसे अज़ान का मौक़अ (Chance) दिया जाए तो ऐसी सूरत में निज़ाअ (झगड़ा) ख़त्म करने के लिये कुरआ अन्दाज़ी का तरीक़ा इख़्तियार करना पड़ेगा, मगर अफ़सोस ! लोग इन दोनों आ'माल के सवाब और इन की फ़ज़ीलत से ला इल्म हैं । नीज़ तक्बीरे ऊला की फ़ज़ीलत के बारे में मरवी है कि

[1]..... نَسَائِي، كتاب الاذان، (۱۳) - رفع الصوت بالاذان، ص ۱۱۲، حدیث: ۶۲۳

[2]..... بخاری، كتاب الاذان، باب الاستهامة في الاذان، ص ۲۱۸، حدیث: ۶۱۵ مفهوماً

जो शख्स **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** की रिज़ा हासिल करने के लिये 40 दिन बा जमाअत नमाज़ पढ़े और तकबीरे ऊला पाए, उस के लिये दो आज्ञादियां लिख दी जाएंगी : एक नार (या'नी जहन्नम) से और दूसरी निफ़ाक़ से ।⁽¹⁾

में साथ जमाअत के पढ़ूं सारी नमाज़ें
अब्बाह ! इबादत में मेरे दिल को लगा दे⁽²⁾
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

(6) नेकी की दा'वत का सवाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नमाज़ के लिये किसी को जगाना यकीनन नेकी की दा'वत देना है और यूं **सद्दाए मदीना** लगाने वाले रोज़ाना नेकी की दा'वत देने का अज़ीम अज़्रो सवाब लूटते हैं । जैसा कि हज़रते सय्यिदुना का'बुल अहबबार **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَفَّار** फ़रमाते हैं : जन्नतुल फ़िरदौस खास उस शख्स के लिये है जो नेकी की दा'वत दे और बुराई से मन्अ करे ।⁽³⁾

(7) दा'वते इस्लामी का तअरूफ़

सद्दाए मदीना लगाना दा'वते इस्लामी के तअरूफ़ का भी एक बहुत बड़ा ज़रीआ है । **सद्दाए मदीना** लगाने से पूरे जैली हल्के में दा'वते इस्लामी की तशहीर होती है और यूं दा'वते इस्लामी का पैग़ाम (Message) घर घर पहुंच जाता है, जिस से लोगों के दिलों में दा'वते इस्लामी की महबूबत पैदा होती है और उन्हें तरगीब दिला कर मदनी माहोल के क़रीब लाना आसान होता है । बिलखुसूस ऐसे



[1].....ترمذی، ابواب الصلاة، باب ما جاء في فضل التكبيرة الاولى، ص ٤٨، حديث: ٢٢١

[2].....वसाइले बख़्शिश (मुम्मम), स. 114

[3].....تَنْبِيْهُ الْمُتَعَمِّدِيْنَ، الباب الرابع، ومنها امرهم بالمعروف وهي عن المنكر، ص ٢٠١



अलाके जहां दा'वते इस्लामी का मदनी काम नया शुरू हो वहां **सदाएँ मदीना** लगाना मदनी काम में बहुत मुआविन साबित होता है।

(8) सदाएँ मदीना में मुसलमानों के लिये दुआ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब कोई **सदाएँ मदीना** लगाते वक्त घरों में सोए हुवों को यह दुआ देता है कि **اَللّٰهُمَّ** **عَزَّوَجَلَّ** आप को बार बार हज नसीब करे और बार बार मीठा मदीना दिखाए। तो **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ تَعَالٰى** **सदाएँ मदीना** में दी जाने वाली मदीने की यह दुआएं उस के हक में भी क़बूल होंगी।

जैसा कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने अलीशान है : जब आदमी अपने भाई के लिये उस की ग़ैर मौजूदगी में दुआ करता है तो एक फ़िरिश्ता कहता है कि तेरे लिये भी इस की मिस्ल हो।⁽¹⁾ जब कि एक रिवायत में है : **اَللّٰهُمَّ** **عَزَّوَجَلَّ** इरशाद फ़रमाता है : ऐ मेरे बन्दे ! मैं तुझ से शुरू करूंगा (या'नी पहले तुझे अता करूंगा)।⁽²⁾

सदाएँ मदीना दिखाए मदीना

इलाही दिखा दे ज़ियाए मदीना

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ

صَلُّوْا عَلٰى الْحَبِيْب !



सदाएँ मदीना के दुन्यवी फ़वाइद



सदाएँ मदीना एक ऐसा प्यारा मदनी काम है जिस से दीनी फ़वाइद के साथ साथ कसीर दुन्यवी फ़वाइद भी हासिल होते हैं क्योंकि **सदाएँ मदीना** हमेशा



[1].....مسلم، كتاب الذكر... الخ، باب فضل الدعاء... الخ، ص 1039، حديث: 2632

[2].....توث القلوب، الفصل الرابع والاربعون في الاخوة في الله... الخ، 382/2





चेहल क़दमी के अन्दाज़ में लगाई जाती है और पैदल चलने के बेशुमार तिब्बी फ़वाइद मन्कूल हैं। जैसा कि एक हिकायत में है कि पड़ोसी मुल्कों के दो बादशाहों में गहरी दोस्ती थी, इन में एक बादशाह तरह तरह के अमराज़ और टेन्शन (Tension) से तंग जब कि दूसरा बादशाह खुशहाल और सिद्दहत मन्द था। एक बार बीमार बादशाह ने तन्दुरुस्त बादशाह से कहा : मैं माहिर त़बीबों (Doctors) से इलाज करवाने के बा वुजूद हुसूले सिद्दहत में नाकाम हूँ, आप किस त़बीब से इलाज करवाते हैं ? तन्दुरुस्त बादशाह ने मुस्करा कर कहा : मेरे पास दो त़बीब हैं। बीमार बादशाह ने कहा : बराहे करम ! मुझे भी उन से मिलवा दीजिये, अगर उन्होंने ने मेरा इलाज कर दिया तो उन को माला माल कर दूंगा। तन्दुरुस्त बादशाह हंस पड़ा और कहने लगा : मेरे त़बीब मेरा बिल्कुल मुफ़्त इलाज करते हैं और वोह दो त़बीब हैं : मेरे दोनों पाउं ! और त़रीके इलाज येह है कि इन के साथ मैं ख़ूब पैदल चलता हूँ लिहाज़ा मेरी सिद्दहत अच्छी रहती है और आप ग़ालिबन ज़ियादा तर बैठे रहते, पैदल चलने से कतराते और थोड़े थोड़े फ़ासिले पर भी सुवारी पर आते जाते हैं लिहाज़ा खुद को बीमार और ज़ेहनी दबाव का शिकार पाते हैं।⁽¹⁾

पैदल चलने के चन्द एक फ़वाइद मज़ीद मुलाहज़ा फ़रमाइये :



सुब्ह के वक़्त पैदल चलना, इन्सान को सिद्दहत मन्द रखता है।



पैदल चलना मुख़्तलिफ़ क़िस्म की बीमारियों (हार्ट अटेक, फ़ालिज, लक़्वा, दिमागी अमराज़, हाथ पाउं और बदन का दर्द, ज़बान और गले की बीमारियां,

1.....खुदकुशी का इलाज, स. 71





मुंह के छाले, सीने और फेफड़े के अमराज, सीने की जलन, शूगर, हाई ब्लडप्रेसर, जिगर और पित्ते के अमराज (वगैरा) से बचाता है।

❁ पैदल चलने की वजह से जेहनी दबाव (Depression) पर काफी हद तक काबू पाया जा सकता है।

❁ पैदल चलने से बिलखुसूस सांस फूलने की बीमारी से अफ़ियत रहती है।

❁ सुबह के वक़्त पैदल चलने से सारा दिन हश्शाश बश्शाश गुज़रता है।

❁ पैदल चलने से वज़न भी ए'तिदाल में रहता है।

❁ पैदल चलना याददाश्त को तक्वियत पहुंचाता है।

❁ पाबन्दी से पैदल चलने वाले का ब्लडप्रेसर (Blood Pressure) मुतवाज़िन रहता है।

❁ पैदल चलना हड्डियों को मज़बूत बनाता है।

❁ पैदल चलने वाले मोटापे का शिकार नहीं होते।

❁ पैदल चलने से आ'साबी खिचाव ख़त्म होता है।

❁ पैदल चलने से हाज़िमा दुरुस्त होता है।

❁ इन्सानी आ'ज़ा बेहतर तौर पर काम करते हैं।

❁ पैदल चलने के दौरान खून की गर्दिश तेज़ होती है, जिस की बदौलत जिस्म से एक ख़ास किस्म का ज़हरीला माद्दा ख़ारिज होता है, जिस की ख़ासियत अफ़यून से मिलती जुलती है। इस के ख़ारिज न होने से मुख़लिफ़ दर्देँ और तकालीफ़ में इज़ाफ़ा होता रहता है।

❁ पैदल चलने से खून में मौजूद गन्दा कोलेस्ट्रॉल (Cholesterol) ख़ारिज हो जाता है।



मदीने का बुलावा

टेंग मोड़ (कुसूर, पंजाब पाकिस्तान) के अलाके इलाहाबाद के मुक़ीम एक इस्लामी भाई के बयान का खुलासा है : **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلَيْهِ** मैं दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता तो था लेकिन मदनी कामों के सिलसिले में सुस्ती का शिकार था । हुस्ने इत्तिफ़ाक़ से मुहर्मुल ह़राम 1431 हिजरी ब मुताबिक़ जनवरी 2010 ईसवी को दा'वते इस्लामी के डिवीज़न मुशावरत के जिम्मेदार इस्लामी भाई से मुलाकात का शरफ़ हासिल हुआ, जब उन्हें मेरी मदनी कामों में अ़दमे दिलचस्पी का इल्म हुआ तो इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे न सिर्फ़ मदनी काम करने का ज़ेहन दिया बल्कि **सदाएँ मदीना** की पाबन्दी करने की तरगीब भी दिलार्ई । नीज़ इस जिम्न में उन्होंने ने मुझे शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत **اَمّت بَرکاتُهُمُ الْعَالِيَة** का फ़रमान “**सदाएँ मदीना दिखाएँ मदीना !**” भी सुनाया । **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلَيْهِ** मेरा ज़ेहन बन गया और हाज़िरिये मदीना की उम्मीद पर अगले ही दिन मैं ने उस पर अ़मल शुरू कर दिया । **सदाएँ मदीना** क्या लगानी शुरू की, मुझ पर तो **اَللّٰهُ** और उस के रसूल **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ** का करम हो गया । मेरे तो वारे ही न्यारे हो गए, किस्मत का सितारा यूँ चमका कि उसी साल मुझे बारगाहे मुस्तफ़ा की हाज़िरी का शरफ़ हासिल हो गया । करम बालाएँ करम येह कि **सदाएँ मदीना** की बरकत से मेरे बड़े भाई को भी हज़ की सआदत नसीब हो गई, दौराने हज़ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत **اَمّت بَرکاتُهُمُ الْعَالِيَة** से बैअत होने का शरफ़ भी मिल गया । शायद येह मदीने शरीफ़ की हाज़िरी और एक वलिये कामिल से बैअत की बरकत थी कि मेरे भाई



जो पहले नमाजों की अदाएगी में सुस्ती का शिकार थे, नेकियों की जानिब माइल होने लगे और बा जमाअत नमाज का एहतिमाम करने लगे। दाढी शरीफ़ की भी निय्यत कर ली। हज से वापसी के कमो बेश दो माह बा'द जब कि एक अज़ीज की शादी में शरीक थे, बारात आने ही वाली थी कि नमाज का वक़्त हो गया, सब को बा आवाजे बुलन्द नमाज की दा'वत दी और मस्जिद की जानिब चल दिये। जब वुजू के लिये वुजू खाने पर पहुंचे तो अचानक दिल का दौरा पड़ने की वजह से गिर पड़े। नमाजियों ने आगे बढ़ कर उठाया और मस्जिद में लिटा दिया। मस्जिद में लिटाते ही उन की रूह क़फ़से उ़नसुरी से परवाज़ कर गई। वहां मौजूद सभी लोग भाईजान की इस ईमान अफ़रोज़ वफ़ात पर अफ़सोस के साथ साथ रश्क करने लगे।⁽¹⁾

सदाए मदीना दिखाए मदीना

इलाही दिखा दे ज़ियाए मदीना

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

सदाए मदीना और अमीरे अहले सुन्नत



मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत **سَامَتْ بِرُكَاةِهِمْ الْعَالِيَةِ** भी सदाए मदीना लगाया करते थे जैसा कि एक मदनी मुज़ाकरे में आप इरशाद फ़रमाते हैं : मैं अपने घर, पीर कौलोनी से फ़ज़्र में फ़ैज़ाने मदीना आते हुवे सदाए मदीना लगाता था।⁽²⁾














[1].....चमकदार क़फ़न, स. 9

[2].....मदनी मुज़ाकरा, 10 जुमादिल ऊला, 1436 यक़ुम मार्च 2015





सदाए मदीना के चन्द मदनी फूल

- (1)  सदाए मदीना शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بِرُكَاةَهُمُ الْعَالِيَةِ** के मुनाजातो, ना'तो और मन्कबतो के मुअत्तर मुअत्तर मदनी गुलदस्ते वसाइले बरिख़ाश (मुरम्मम) के सफ़हा 665 के मुताबिक़ ही लगाएं क्यूंकि **عَزَّوَجَلَّ** के वली की ज़बान, निगाह और दुआ के साथ साथ तहरीर में भी असर होता है ।
- (2)  सदाए मदीना के लिये मेगाफ़ोन (Mega Phone) का इस्ति'माल न करें ।
- (3)  इस्लामी भाइयों की ता'दाद ज़ियादा होने की सूरत में मुख़्तलिफ़ सम्तों में दो-दो इस्लामी भाई भेज दिये जाएं ।
- (4)  अगर कोई इस्लामी भाई न आए तो अकेले ही सदाए मदीना की सआदत हासिल करें ।
- (5)  सदाए मदीना अज़ाने फ़ज़्र के बा'द शुरूअ की जाए ।
- (6)  जहां कहीं जानवर (Animals) वगैरा बंधे हों, वहां आवाज़ क़दरे कम होनी चाहिये ।
- (7)  सदाए मदीना से फ़ारिग़ हो कर मस्जिद में इतनी देर पहले पहुंचें कि सुन्नते क़ब्लिय्या इक़ामत से क़ब्ल और सफ़े अक्वल व तक्बीरे ऊला पा सकें ।
- (8)  सदाए मदीना से क़ब्ल ही इस्तिन्जा और वुजू से फ़ारिग़ हो लें ।
- (9)  फ़ज़्र में उठाने के लिये तरगीब और नाम लिखने की तरकीब भी की जाए ।
- (10)  जो इस्लामी भाई नाम लिखवाएं, उन के दरवाज़े पर दस्तक दें या बेल (Bell) भी बजाएं । मोबाइल कोल/Sms के ज़रीए भी नमाज़ के लिये जगाया जा सकता है ।
- (11)  किसी भी मो'तरिज़ (ए'तिराज़ करने वाले) या झगड़ालू से झगड़ें न उलझें ।



(12) अजाने फ़ज़्र से इतनी देर पहले उठें कि आप ब आसानी फ़ज़्र का वक़्त शुरू होने से क़ब्ल इस्तिन्जा व वुजू और तहज्जुद से फ़ारिग़ हो सकें।

(13) वक़्ते मुनासिब पर उठने के लिये अलार्म (Alarm), घर के किसी बड़े, चौकीदार या किसी इस्लामी भाई को जगाने का कहने की तरकीबें करें। शजरए कादिरिया रज़विया ज़ियाइया अज़ारिया में सफ़हा नम्बर 32 पर है : सूरतुल कहफ़ की आख़िरी चार आयतें या 'नी **إِنَّ الزَّيْنَ أَمْنُوا** से ख़त्मे सूरह तक। रात में या सुबह जिस वक़्त जागने की निय्यत से पढ़ें आंख खुलेगी।⁽¹⁾ **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**

(14) जामिअतुल मदीना के त़लबाए किराम भी क़रीबी अ़लाके में मदनी मर्कज़ की तरफ़ से दिये गए तरीके कार के मुताबिक़ **सदाएँ मदीना** लगाएं, रिहाइशी दरज़ों में भी **सदाएँ मदीना** की तरकीब की जाए। अगर इस के लिये बा काइदा जिम्मेदार का त़कऱर हो तो इस मदनी काम में मज़बूती रहेगी। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**

(15) रिहाइशी मद्रसतुल मदीना के बड़े त़लबा भी क़रीबी अ़लाके में मदनी मर्कज़ की तरफ़ से दिये गए तरीके कार के मुताबिक़ **सदाएँ मदीना** लगाएं, नीज़ दरज़ों (Classes) में भी इस की तरकीब की जाए। (दरजे में जो **सदाएँ मदीना** लगाई जाए, उस के अल्फ़ाज़ में कुछ तरमीम के साथ मसलन इस्लामी भाइयो ! की जगह “मदनी मुन्नो !” कहा जाए)

(16) ता'लीमी इदारों (यूनीवर्सिटी व कोलेजिज़ वगैरा) के होस्टेलज़ में त़लबा (Students) भी तन्ज़ीमी तरीके कार के मुताबिक़ (ज़ैली हल्कों में लगाई जाने वाली **सदाएँ मदीना** के अन्दाज़ पर) **सदाएँ मदीना** लगाएं, होस्टेल के अन्दर भी दस्तक दे कर / मोबाइल कॉल / Sms के ज़रीए भी **सदाएँ मदीना** लगाई जाए।

[1].....दारी, کتاب فضائل القرآن، باب فی فضل سورة الکهف، ص ۱۰۳۳، حدیث: ۳۲۰۷ مفهوماً



गली में सदाएँ मदीना का तरीका

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ कर दुरूदो सलाम के जैल में दिये हुवे सीगे पढ़ कर इस के बा'द वाला मजमून दोहराते रहिये :

وَعَلَىٰ إِلِكْ وَأَصْحِبِكَ يَا حَبِيبَ اللَّهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ
وَعَلَىٰ إِلِكْ وَأَصْحِبِكَ يَا نُورَ اللَّهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللَّهِ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो और इस्लामी बहनो ! फ़ज़्र की नमाज़ का वक़्त हो गया है । सोने से नमाज़ बेहतर है । जल्दी जल्दी उठिये और नमाज़ की तय्यारी कीजिये । **اللّٰهُمَّ** आप को बार बार हज़ नसीब करे और बार बार मीठा मदीना दिखाए ।

(मौक़अ की मुनासबत से नीचे दी हुई नज़्म में से मुन्तख़ब अश़आर भी तर्ज़ में या बिगैर तर्ज़ के पढ़िये)

अब फिर ऊपर दिया हुवा दुरूदो सलाम पढ़िये, इस के बा'द मौक़अ की मुनासबत से दोबारा ऊपर दिया हुवा मजमून या जैल में दिये गए अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** के नज़्मकर्दा अश़आर में से मुन्तख़ब अश़आर पढ़िये :⁽¹⁾

[1]नेक बनने बनाने के तरीके, स. 188 बित्तसरुफ़



फ़ज़्र का वक़्त हो गया उठो !

फ़ज़्र का वक़्त हो गया उठो !
 जागो जागो ऐ भाइयो- बहनो !
 तुम को हज़ की ख़ुदा सआदत दे
 उठो ज़िक्रे ख़ुदा करो उठ कर
 फ़ज़्र की हो चुकी अज़ानें वक़्त
 भाइयो ! उठ कर अब वुजू कर लो
 नींद से तो नमाज़ बेहतर है !
 उठ चुको अब खड़े भी हो जाओ !
 जागो जागो नमाज़ ग़फ़लत से
 अब “जो सोए नमाज़ खोए” वक़्त
 याद रखवो ! नमाज़ गर छोड़ी
 बे नमाज़ी फंसेगा महशर में
 मैं “सदाएँ मदीना” देता हूँ
 मैं भिकारी नहीं हूँ दर दर का
 मुझ को देना न पाई पैसा तुम !
 तुम को देता है येह दुआ अत्तार

ऐ गुलामाने मुस्तफ़ा उठो !
 छोड़ दो अब तो बिस्तरा उठो !
 जल्वा देखो मदीने का उठो !
 दिल से लो नामे मुस्तफ़ा उठो !
 हो गया है नमाज़ का उठो !
 और चलो ख़ानए ख़ुदा उठो !
 अब न मुत्लक़ भी लेटना उठो !
 आंख शैतां न दे लगा उठो !
 कर न बैठो कहीं कज़ा उठो !
 सोने का अब नहीं रहा उठो !
 क़ब्र में पाओगे सज़ा उठो !
 होगा नाराज़ किब्रिया उठो !
 तुम को तयबा का वासिता उठो !
 मैं हूँ सरकार का गदा उठो !
 मैं हूँ तालिब सवाब का उठो !
 फ़ज़ल तुम पर करे ख़ुदा उठो ! (1)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

1वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 666

माहे रमजानुल मुबारक में “सदाएँ सहरी” पर मुश्तमिल अमीरे अहले सुन्नत के अश्कार

वक़्त सहरी का हो गया जागो

वक़्त सहरी का हो गया जागो
उठो सहरी की कर लो तय्यारी
माहे रमज़ां के फ़र्ज़ हैं रोज़े
उठो उठो वुज़ू भी कर लो और
चुस्कियां गर्म चाए की भर लो
होगी मक्बूल फ़ज़ले मौला से
माहे रमज़ां की बरकतें लूटो
खा के सहरी उठो अदा कर लो
तुम को मौला मदीना दिखलाए
तुम को रमज़ां के सदके मौला दे
तुम को रमज़ां का मदीने में
कैसी प्यारी फ़ज़ा है रमज़ां की
रहमतों की झाड़ी बरसती है
तुम को दीदारे मुस्तफ़ा हो जाए

नूर हर सम्त छा गया जागो
रोज़ा रखना है आज का जागो
एक भी तुम न छोड़ना जागो
तुम तहज्जुद करो अदा जागो
खा लो हल्की सी कुछ ग़िज़ा जागो
खा के सहरी करो दुआ जागो
लूट लो रहमते ख़ुदा जागो
सुन्नते शाहे अम्बिया जागो
और हज़ भी करो अदा जागो
उल्फ़त व इश्के मुस्तफ़ा जागो
दे शरफ़ रब्बे मुस्तफ़ा जागो
देख लो कर के आंख वा जागो
जल्द उठ कर के लो नहा जागो
है येह अत्तार की दुआ जागो (1)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

[1]....वसाइले बख़्शिश (मुरम्म), स. 668

सदाए मदीना की मदनी बहारें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सदाए मदीना एक ऐसा प्यारा मदनी काम है कि जिन जिन जैली हल्कों में सदाए मदीना की पाबन्दी होती है वहां नमाजे फ़त्र में नमाज़ियों की मदनी बहारें आ जाती हैं । चुनान्चे,

शामियाने लगाने पड़े

एक इस्लामी भाई का बयान है : सख्त सर्दियों के दिनों में हम ने सदाए मदीना की पाबन्दी की तो मस्जिद में नमाज़ियों की इस क़दर ता'दाद बढ़ गई कि मस्जिद इन्तिज़ामिय्या को नमाजे फ़त्र में मस्जिद के सेहून में जुमुआ की तरह शामियाने लगाने पड़े ।

सदाए मदीना की बरकत से फैज़ाने मदीना के लिये ज़मीन मिल गई

एक इस्लामी भाई का बयान है : दा'वते इस्लामी के मदनी काफ़िले के साथ हम एक शहर में गए, अज़ाने फ़त्र के बा'द हम सदाए मदीना लगाते जा रहे थे कि अचानक एक घर से एक मोर्डन नौजवान हमारे साथ शामिल हुवा और उस ने फ़त्र की नमाज़ मस्जिद में बा जमाअत अदा की । बा'द में उस नौजवान के वालिद मदनी काफ़िले वालों से मिलने के लिये आए । येह साहिबे सरवत थे । इन्हों ने आ कर बताया कि सदाए मदीना की बरकत से मेरा ना फ़रमान मोर्डन (Modern) बे नमाज़ी बेटा पंजवक़ता नमाज़ पढ़ने लगा है । الْحَمْدُ لِلَّهِ الْعَلِيِّ इस मोर्डन (Modern) नौजवान के वालिद ने मुतअस्सिर हो कर उस शहर में मदनी मर्कज़ फैज़ाने मदीना के लिये ज़मीन दे दी ।

सदाए मदीना दिख्वाए मदीना

एक डिवीज़न (Division) के मदनी मश्वरे में दौराने मदनी मश्वरा जब सदाए मदीना की बात चली तो एक इस्लामी भाई खड़ा हुवा और कहने लगा :



اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى كُلِّ مَسْجِدٍ मुझे मदीने शरीफ़ की हाज़िरी की सआदत हासिल हुई है और यह सब सदाए मदीना की बरकतें हैं कि मैं पाबन्दी से सदाए मदीना लगाता हूँ।

सदाए मदीना दिखाए मदीना

इलाही दिखा दे ज़ियाए मदीना

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ



सदाए मदीना के चन्द मुन्तख़ब मदनी फूल



दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के मदनी मश्वरों में से (ज़रूरी तरमीम के साथ) मुन्तख़ब चन्द मदनी फूल :

❁ "बा'दे फ़त्र मदनी हल्का" मस्जिद और "सदाए मदीना" आप के अलाके के लोगों के अकाइदो आ'माल का तहफ़ुज़ करेगा। **إِنْ شَاءَ اللهُ تَعَالَى**

❁ माहे रजबुल मुरज्जब और शा'बानुल मुअज़्जम में जिम्मेदाराने दा'वते इस्लामी का जदवल कुछ यूँ हो कि अव्वलन नमाज़े तहज्जुद बा जमाअत अदा की जाए। फिर सहरी, सदाए मदीना, नमाज़े फ़त्र बा जमाअत, मदनी हल्का और इशराक़ व चाशत की तरकीब हो।

❁ जिम्मेदाराने दा'वते इस्लामी सदाए मदीना, मदनी हल्का, मस्जिद दर्स, चौक दर्स, अलाकाई दौरा और मद्रसतुल मदीना बराए बालिग़ान वगैरा पर खुसूसी तवज्जोह दें और इन मदनी कामों में शिर्कत की सआदत हासिल करते रहें।

❁ मद्रसतुल मदीना बराए बालिग़ान के ज़रीए बहुत से मदनी कामों को शुरूअ या मज़बूत किया जा सकता है। मसलन मदनी काफ़िले व मदनी इन्आमात मस्जिद / घर / स्कूल / कोलेज / चौक दर्स, सदाए मदीना, अलाकाई दौरा बराए नेकी की दा'वत, VCD इजतिमाअ (ओडियो, वीडियो), तक्सीमे रसाइल वगैरा.....

❁ किसी भी मुल्क में दा'वते इस्लामी को मज़बूत करने के लिये सब से पहले चन्द मख़सूस मदनी कामों को मज़बूत किया जाए मसलन मदनी दर्स (दर्से फ़ैज़ाने



सुन्नत वगैरा), **सदाए मदीना**, मद्रसतुल मदीना बालिगान, अलाकाई दौरा बराए नेकी की दा'वत, हफ्तावार इजतिमाअ, मदनी इन्आमात और मदनी काफिला ।

❁✎ मदनी इन्आमात पर अमल करते हुवे बा'दे इशा जल्द सोने की तरकीब करें ताकि तहज्जुद, **सदाए मदीना**, बा जमाअत नमाजे फ़ज़्र, मदनी हल्का, इशराक़ व चाशत वगैरा की सआदतें ब आसानी हासिल हो सकें ।

❁✎ अलाकों में जा कर रोजे रखने रखवाने, **सदाए मदीना** लगाने, बा'दे फ़ज़्र मदनी हल्का और इशराक़ व चाशत की तरकीब बनाई जाए । (बिलखुसूस रजबुल मुरज्जब, शा'बानुल मुअज़्ज़म में और उमूमन हर पीर शरीफ़ को)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

मदनी मुज़ाकरों से सदाए मदीना के मुन्तख़ब मदनी फूल

❁✎ दर्स देने, अलाकाई दौरा करने, **सदाए मदीना** लगाने, मद्रसतुल मदीना बालिगान में पढ़ने/ पढ़ाने के लिये तन्जीमी जिम्मेदारी ज़रूरी नहीं । (6 अगस्त 2016 ईसवी)

❁✎ मैं अपने घर, पीर कोलोनी से फ़ज़्र में फ़ैज़ाने मदीना आते हुवे **सदाए मदीना** लगाता था । (यकुम मार्च 2015 ईसवी)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

औलाद को कम अक्ली से बचाने का नुस्खा

اَللّٰهُمَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने खैरियत निशान है : जो शख्स दस्तरख़्वान से खाने के गिरे हुवे टुकड़ों को उठा कर खाए वोह फ़राखी की जिन्दगी गुज़ारता है और उस की औलाद और औलाद की औलाद कम अक्ली से महफूज़ रहती है ।

(كنز العمال، حرف الميم، كتاب المعيشة و العادات من قسم الاقوال، الباب الاول في الاكل،

الفصل الاول في آداب الاكل، المجلد الثامن، 111/15، حديث 30815)

ماخذ ومراجع

✿✿✿	كلام بهارى تعالى	قرآن مجيد	✿✿
مطبوعه	مصنف / مؤلف	كتاب	نمبر شمار
مكتبة المدينة، باب الدينه	اعلى حضرت امام احمد رضا خان، متوفى ١٣٣٠هـ	كنز الایمان	1
دار الكتب العلمیه بيروت ١٣٢٩هـ	امام احمد بن محمد بن حنبل، متوفى ٢٤١هـ	المسند	2
دار المعرفة بيروت ١٣٢١هـ	امام حافظ عبد الله بن عبد الرحمن دارمی، متوفى ٢٥٥هـ	سنن الدانی	3
دار المعرفة بيروت ١٣٢٨هـ	امام ابو عبد الله محمد بن اسماعيل بخاری، متوفى ٢٥٦هـ	صحیح البخاری	4
دار الكتب العلمیه بيروت 2008ء	امام ابو الحسين مسلم بن حجاج قشیرى، متوفى ٢٦١هـ	صحیح مسلم	5
دار الكتب العلمیه بيروت ١٣٢٨هـ	امام ابوداود سليمان بن اشعث سجستانی، متوفى ٢٤٥هـ	سنن ابى داود	6
دار الكتب العلمیه بيروت 2008ء	امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفى ٢٤٩هـ	سنن الترمذی	7
دار الصمیعی الرياض ١٣١٩هـ	امام ابوبکر احمد بن عمرو ابن ابى عاصم، متوفى ٢٨٤هـ	السنه	8
دار الكتب العلمیه بيروت 2009ء	امام ابو عبد الرحمن احمد بن شعيب نسائی، متوفى ٣٠٣هـ	سنن النسائی	9
دار الكتب العلمیه بيروت ١٣٢٨هـ	علامه شیخ ولى الدين ابو عبد الله محمد بن عبد الله تیریزى، متوفى ٤٣١هـ	مشكاة المصابیح	10
نعمی كتب خانه گجرات	حكیم الامت مفتی احمد یار خان نعمی، متوفى ١٣٩١هـ	مرآة المناجیح	11
رضا فاؤنڈیشن لاهور	اعلى حضرت امام احمد رضا خان، متوفى ١٣٣٠هـ	فتاوى رضویه	12
دار الكتب العلمیه	محمد بن سعد بن منیع هاشمى،	الطبقات	13

بیروت ۱۴۱۱ھ	متوفی ۱۴۳۰ھ	الکبری	
دارالکتب العلمیة بیروت 2008ء	امام جلال الدین عبدالرحمن سیوطی شافعی، متوفی ۹۱۱ھ	تاریخ الخلفاء	14
دارالکتب العلمیة بیروت ۱۴۳۰ھ	فقیہ ابو اللیث نصر بن محمد سمرقندی، متوفی ۳۷۳ھ	تنبیہ الغافلین	15
دارالکتب العلمیة بیروت ۱۴۲۶ھ	شیخ ابوطالب محمد بن علی مکی، متوفی ۳۸۶ھ	قوت القلوب	16
مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۲۷ھ	امام برهان الدین ابراہیم زرنبی، متوفی ۶۱۰ھ	رہا علم	17
مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۳ھ	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۳۰ھ	حدائق بخشش	18
مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۲ھ	حضرت علامہ مولانا محمد الیاس قادری رَأَمَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ	وسائل بخشش	19
مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۲۸ھ	حضرت علامہ مولانا محمد الیاس قادری رَأَمَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ	فیضان سنت	20
مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی	حضرت علامہ مولانا محمد الیاس قادری رَأَمَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ	خود کشی کا علاج	21
مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی	حضرت علامہ مولانا محمد الیاس قادری رَأَمَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ	شجرہ قادریہ رضویہ ضیائیہ عطاریہ	22
مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۲ھ	المدینة العلمیة	نیک بننے اور بنانے کے طریقے	23
مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۶ھ	المدینة العلمیة	فیضان فاروق اعظم	24
مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی	المدینة العلمیة	چمکدار کفن	25

फ़ेहरिस्त

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा
दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	1	(8) सदाएँ मदीना में मुसलमानों	
शे'र की वज़ाहत	2	के लिये दुआ	15
सदाएँ मदीना क्या है ?	2	सदाएँ मदीना के दुन्यवी फ़वाइद	15
सदाएँ मदीना लगाना सुन्नत है	3	मदीने का बुलावा	18
सुन्नते दावूदी	4	सदाएँ मदीना और अमीरे अहले सुन्नत	19
सहाबए किराम का अम्बियाए		सदाएँ मदीना के चन्द मदनी फूल	20
किराम की सुन्नत पर अमल	5	गली में सदाएँ मदीना का तरीका	22
अदाएँ सुन्नत पर मौत	6	फ़ज़्र का वक़्त हो गया उठ्ठे	23
मुर्ग़ की ड्यूटी	9	माहे रमज़ानुल मुबारक में सदाएँ	
सदाएँ मदीना के फ़वाइद	10	सहरी पर मुश्तमिल अमीरे अहले	
(1) नमाज़ की हिफ़ाज़त	10	सुन्नत के अशआर	24
(2) रिज़्क में इज़ाफ़ा	11	सदाएँ मदीना की मदनी बहारें	25
(3) एक नमाज़ में कई नमाज़ों का सवाब	11	शामियाने लगाने पड़े	25
(4) तहज़्जुद की सआदत	12	सदाएँ मदीना की बरकत से फ़ैज़ाने	
(5) पहली सफ़ में तकबीरे ऊला के साथ नमाज़ की फ़ज़ीलत	13	मदीना के लिये ज़मीन मिल गई	25
(6) नेकी की दा'वत का सवाब	14	सदाएँ मदीना के चन्द मुन्तख़ब	
(7) दा'वते इस्लामी का तआरुफ़	14	मदनी फूल	26
		माख़ज़ो मराजेअ	28
		फ़ेहरिस्त	30